पोवार समाज को जागरण

सम्मानीय पोवार भाउ बहिनी गिनलक निवेदन से कि वर्तमान मा पोवार समाज का ढेर सारा संगठन गाँव लक धरकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक अन व्हाटसाफ ग्रुप बन गयी सेत। हर संगठन अन ग्रुप अपरी मंशा को अनुसार काम कर रही सेत। सबका अपरा अपरा मानदण्ड अन अपरी अपरी गतिविधि सेतीन।

समाज को जागरण लाई अनेक बिन्दू अन काम होय सकसेतीन पर मी प्रमुख रूप लक समाज जागरण लाई चार बिन्दु पर सब संगठन अन ग्रुप को ध्यान आकृष्ट करनो चाह रही सेव।

(1) स्वाभिमान

(2) संस्कार

(3) पहिचान

(4) शक्ति

(1) स्वाभिमान --- पोवार समाज को स्वाभिमान --स्वाभिमान जो शुप्त होय गयी से वोला जाग्रत करन लाई पोवार समाज को इतिहास की जानकारी पुरो पोवार समाज ला देन की शक्त जरुरत से

यो काम लेख कविता गीत गाना नाटक ड्रामा डंढ्यार रंगमंच अन अपरी विरासत को माधयम् लक काम कर्यो जाय सक से अन सांगयो जाय सक से कि तुम्ही राज करन वाला राजपूत क्षत्रिय आव। तुम्ही राजा की संतान

आव। जसो कि हजारो हजारो साल लक हमारी माय बहिन गीत गाना को माध्यम लक सांगत होतिन को तुम्ही राजा महाराजा की संतान राज करन वाला राजकुँवर आव। जसो की फलदान अन बिजोरा को गाना मा गावत होतिन ।

(1)-- कोन गाँव की आई बरात

अयोध्या गाँव की आई बरात

झलमा पर्दा की आई गुड़ुर

लोखंड की असकुड़ माय किस धूर।

बैल जुपीसेत धवल पवन

धुरकोरी बसी सेत राजकुँवर

अपरी माय का आतीन बार

हाथ मा धरी सेत ढाल तलवार।

(2) गाँव को आखर पर आमा की अमराई।

वहाँ उतरयो राजा को रनवास।

राजा को रनवास खेल से गोटी।

पिता सोप अपरी बेटी।

(3) -- सोनिया ची आढ़नी भौर ठाट।

चल ओ बाई जेवन ला दूध का भात।

बटकी को दूध भात बटकी मा रह्यो।

राजकुँवर परनू आयो पिता बेटी सोपन लगयो।

(4) --राजा जनक बोलतो भयो बुलाओ गाँव को भाली।

आईन हमरा सजन समधी करो पाय पानी।

असा हमारा बिह्या होली छटी बारसा परहा अन दरन कुटन का गाना हिनमा लगत सा उदाहरण मिल जाहेत की हमी राज करन वाला राजा महाराजा की संतान आजन।

(2) संस्कार -- संस्कार परिवार की प्रमुख जरूर आय। संस्कारित परिवार अन समाज ही सभ्य अन शालिन कहलायो जासे।

संस्कार कोई वस्तु नोहोय जो कि परिवार की जरुरत को अनुसार बजार लक लेयकर आन लेबो।

संस्कार मिल सेतीन रीति रिवाज नेग दस्तूर परम्परा मानबिन्दू आदर्श तीज त्यौहार गीत गाना कथा कहानी अन हमारा धार्मिक ग्रंथ लक।

जसो कि हमारा बिह्या को गीत मा नवरदेव सार होसे तब गाव सेत।

(1) --नवरदेव भाऊ सार होसे

माय आड़वी होसे।

देजो बार देजो बार

मोरो दूध को दाम।

जोड़ी जीतकर आहूँ माय

देहूँ तोरो दूध को दाम।

हमारा पारंपरिक गीत गाना मा ही स्वाभिमान संस्कार पहिचान अन इतिहास छुपी से।

फिर लक विरासत ला अमल ला आनन की जरुरत से अन हमारा रीति रिवाज नेग दस्तूर तीज त्यौहार परम्परा पर शोधकर फिरलक चलन मा आनन की जरुरत से तब जाय के परिवार अन समाज संस्कारित होये।

(3) पहिचान --कोई भी जाति समाज वर्ग सम्प्रदाय की पहिचान एकमात्र वोकी बोली होसे।

पोवार समाज ला अपरी बोली ला फिर लक चलन मा आनन को भागीरथ प्रयास करन की जरूरत से। यह बात हमला इजराइली यहूदियों लक सीखन की जरूरत से जो कि हजारो साल परतंत्र अन दुनिया मा तितर बितर रवहन को बाद भी अपरी हिब्रू भाषा ला नही भूलीन अन हजारो साल बाद भी अपरी मातृभूमि इज़राइल ला
पायकर दुनिया मा अपरो परचम लहराय रही सेतीन।

(4) -शक्ति -- दुनिया मा शक्तिशाली की ही पूजा होसे। कमजोर केतरो च अच्छो रह्व वोकि पूजा नही होय।

चाहे कोई व्यक्ति समाज वर्ग या राष्ट्र होय। शक्तिशाली की पूजा होसे। येको लाई आज पोवार समाजला शक्तिशाली बनावन की जरूरत से ।कलयुग मा संगठन ला शक्ति कह्यो गई से। संघै शक्ति कलयुगे।

आज पोवार समाज ला भी पारा टोला मोहल्ला गाँव नगर तालुका जिला प्रांत राष्ट्र अन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक संगठन एक बैनर या झंडा खाल्या करन की शक्त जरुरत से।

सिवनी जिला मा गाँव तालुका लक जिला स्तर तक वरिष्ठ महिला युवा कार्यकारिणी गठित कर उपरोक्त चारी (4) बिन्दू पर काम चल रही से।

हमरो विश्वास से कि येन बिन्दुओं को आधार पर पोवार समाज परम वैभव ला प्रात कर भारतमाता ला परमवैभव को पद पर आसीन करबो।

धन्यवाद।

जय राजा भोज

जय भारत माता।

कोमलप्रसाद राहँगडाले, कल्याणपुर

धारनाकलाँ तहसील बरघाट जिला सिवनी म. प्र.